गुद रोगों में क्षारसूत्र चिकित्सा

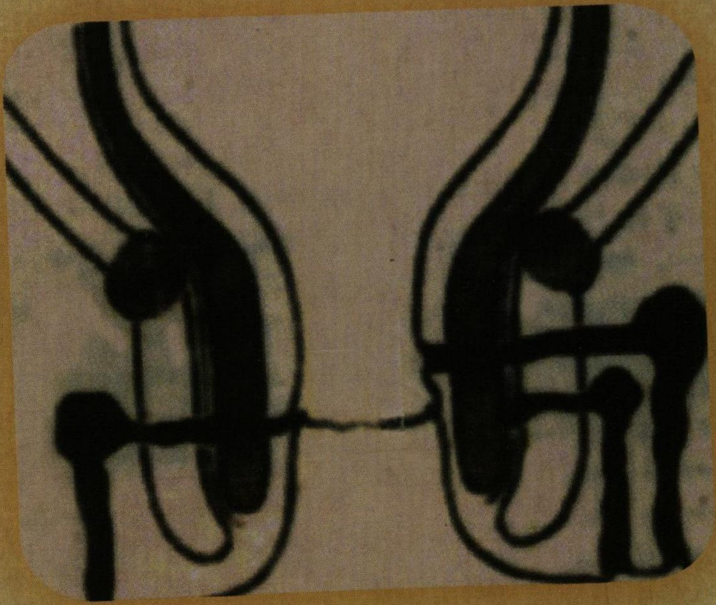

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

भूमिका

अस्वस्थ होने का मुख्य कारण अनुचित खाने की आदतें एवं गलत रहन सहन है। इसके कारण उत्पन्न होने वाली असामान्य पुरीष गति के लम्बे समय तक बने रहने के कारण अनेक गुदरोग पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त ये रोग वंशानुगत भी होते हैं। भगंदर, अर्श एवं परिकर्तिका सामान्यतया पाए जाने वाले गुदरोग हैं। आयुर्वेद में भगंदर एवं अर्श को महागद के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। इन रोगों की जीर्णता एवं पुनरोत्पत्ति होते रहने के कारण रोगी शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना से गुजरता रहता है। इन रोगों की सफलतापूर्वक चिकित्सा के लिए क्षारसूत्र एक विशिष्ट प्रक्रिया है जो आयुर्वेद मे बताई गई है। इस प्रक्रिया द्वारा व्रणमार्ग में औषधीय सूत्र को प्रविष्ट कराया जाता है। आधुनिक शल्यचिकित्सा की तुलना में क्षारसूत्र के अनेक लाभ हैं। क्षारसूत्र एक बहिरंग क्रिया है जिसमें न तो रोगी को अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है व न ही अधिक औषधियों का सेवन कराया जाता है। यह प्रक्रिया पूर्णरूपेण सुरक्षित है। व्रणमार्ग में ऊतकनाश कम होने से संक्रमण की संभावना भी बहुत कम होती है। इसके कोई हानिकर प्रभाव नहीं हैं व न ही कोई उपद्रव यथा मल का रिसना आदि। क्षारसूत्र प्रयोग के पश्चात् रोग की पुनरूत्पत्ति लगभग नहीं होती। यह चिकित्सा सस्ती है व रोगी चिकित्सा के दौरान चलते फिरते हुए अपने दैनिक कार्य कर सकता हैं। यहां पर कुछ प्रमुख गुदरोगों का संक्षिप्त वर्णन एवं आयुर्वेदिक उपचार बताया जा रहा है

भगन्दर

भगन्दर एक व्रणमार्ग है जिसका आन्तरिक छिद्र भीतर की ओर गुद अथवा मलाशय में खुलता है एवं बाह्य छिद्र मलद्वार के पास चर्म पर होता है। क्वचित् इसका एक ही छिद्र होता है जिसे नाड़ी (Sinus) कहते हैं । सामान्यतया यह भगन्दर पिड़िका के अकस्मात् विदीर्ण होने अथवा अनुचित रूप से भेदन करने से पैदा होता है। बीच–2 में पीड़ायुक्त शोथ, वंक्षण प्रदेश में असुविधा व पूयस्राव इसके लक्षण हैं। मल द्वारा संक्रमण, अस्वस्थ तान्तवधातु की उपस्थिति एवं व्रणयुक्त अंग को विश्राम न मिलने से इसका रोपण नहीं होता है। भगन्दर पूर्णतया शल्यक्रिया साध्य रोग है परंतु शल्यक्रिया द्वारा अनेक उपद्रव होते हैं व पुनरूत्पत्ति की संभावना बहुत अधिक रहती है।

चिकित्सा

भगंदर औषधसाध्य रोग नहीं है।

क्षारसूत्र विधि

संक्रमण से बचाव के सभी उपाय अपनाते हुए रोगी को पीठ के बल दोनों पैर घुटने से मोड़कर (Lithotomy Position) लिटाएं। एषणी (Probe) से व्रणमार्ग की परीक्षा कर, क्षारसूत्र को बाह्य छिद्र से प्रविष्ट करा अंतिम सिरे तक लेजा कर बाहर निकाल लें व सूत्र के दोनों सिरों को मिलाकर बांध दें। व्रण पर औषधयुक्त तैल/घृत लगाएं। सूत्र को प्रत्येक सप्ताह बदलें जब तक व्रणमार्ग गलकर कट न जाए। इस चिकित्सा के दौरान रोगी को उष्णजल में बैठाना, औषधीय तैल का प्रयोग व निरंतर मृदु विरेचक का प्रयोग कराएं।

क्षारसूत्र क्रिया आयुर्वेद के चिकित्सकों द्वारा कुशलता पूर्वक प्रयोग हो रही है व केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् की विभिन्न ईकाइयों में ये सेवाएं देशभर में दी जा रही हैं। इस विधि की प्रभावकारिता ICMR द्वारा किए बहुकेन्द्रीय अध्ययनों द्वारा प्रमाणित की गई है। क्षारसूत्र के प्रयोग व अनुसंधान की सुविधा परिषद् के अन्तर्गत आने वाले नई दिल्ली, कोलकाता, भुवनेश्वर, मुम्बई व पटियाला के आयुर्वेदिक अनुसंधान केन्द्रों में दी जा रही है। क्षारसूत्र पर परिषद् अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों व कार्यशालाओं का आयोजन कर रही है। परिषद् के अन्य केन्द्रो में भी क्षारसूत्र विधि के प्रसार हेतु अनेक सुझाव प्रस्तावित किए गए हैं।

अर्श

गुदरोगों में अर्श प्रमुख रूप से पाई जाने वाली व्याधि है जो स्थानीय रक्तवाहिनियों के विस्फारित होने से उत्पन्न होती है। अर्श बाह्य व आभ्यान्तर भेद से दो प्रकार का होता है। गुदा से रक्तस्राव एवं मांसांकुरों का बाहर निकलना, इसके सामान्य लक्षण हैं। क्वचित् अर्शवाहिकाओं में रक्तस्तंभन व संक्रमण होने से वे बाहर आ जाती हैं जिससे उनमें असुविधा व पीड़ा होती है। अर्श प्रमुख रूप से विवंध के कारण पैदा होता है।

चिकित्सा

अर्श की चिकित्सा में मुख्य रूप से मांसाकुरों की सूजन को कम करना, रक्तस्राव को रोकना व मल का नियमित रूप से निष्कासित होना, सुनिश्चित किया जाता है।

क्षारसूत्र विधि

मलद्वार से बाहर निकले आभ्यंतर मांसांकुर एवं बाह्य मांसांकुरों के चारों ओर क्षारसूत्र बांधकर सफलतापूर्वक इलाज किया जा सकता है। बांधे हुए मांसांकुर को गुदा में प्रविष्ट करा सूत्र को बाहर लटकाना चाहिए। हर छः घंटे में रोगी को उष्णजल में बैठाना चाहिए व पश्चात् प्रभाकर तैल लगाकर मृदु विरेचन देना चाहिए। मांसांकुर एक सप्ताह में कटकर गिर जाता है व उस स्थान पर बना व्रण एक सप्ताह में पूर्णतया भर जाता है।

परिकर्तिका

गुदरोगों में परिकर्तिका सबसे कष्टप्रद रोग है। यह गुदमार्ग के निचले भाग में होने वाला एक लम्बा व्रण है। कठिन मल अथवा जीर्ण अतिसार इसके प्रमुख कारण हैं। मल द्वारा लगातार संक्रमित होने के कारण यह व्रण भर नहीं पाता है। व्रण के लंबे समय तक बने रहने से मांसांकुर (Sentinel Tag) बन जाने के कारण भी भर नहीं पाता है। मलत्याग के दौरान अथवा बाद में सरक्त अथवा बिना रक्तस्राव के पीड़ा होना इसका मुख्य लक्षण है।

चिकित्सा

परिकर्तिका की चिकित्सा में प्रमुख रूप से पीड़ा को कम करना, मृदु मल का त्याग व व्रण का तेजी से भरना, इन बातों पर ध्यान दिया जाता है। औषधियों का प्रयोग, गर्म पानी का सेक व जात्यादि घृत अत्यंत उपयोगी हैं।

क्षारसूत्र विधि

मांसांकुर (Sentinel Tag) को उसके मूल से क्षारसूत्र द्वारा बांध देना चाहिए। आकार के आधार पर ये 3 से 7 दिन में अलग हो जाता है। अगले दो–तीन सप्ताह में व्रण भरता है। रोगी को गर्म पानी के सेक के पश्चात् दिन में दो बार जात्यादि तैल लगाना बताना चाहिए। उपयुक्त औषधियों का भी आभ्यंतर प्रयोग कराना चाहिए।

गुद रोगों में सुझाव

पथ्य (क्या करें) ✓

- ✓ चिकित्सक द्वारा दिए निर्देशों का कड़ाई से पालन
- ✓ गुदा के स्थान को स्वच्छ व सूखा रखें
- ✓ पर्याप्त मात्रा में फल एवं सब्जियाँ यथा खीरा,मूली,पत्तागोभी व गाजर आदि का सेवन
- ✓ सभी गुदरोगों में गर्म जल के टब में बैठाना (द्रोणी स्नान)

अपथ्य (क्या न करें) ✗

- ✗ कब्ज से बचें एवं शौचालय में मल निष्कासन के समय जोर न लगाएं
- ✗ मिर्च, मसालेदार, मांसाहार व अन्य गरिष्ठ पदार्थ
- ✗ लंबे समय तक बैठना, खड़े रहना व चलना

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

महानिदेशक

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्

जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन

61-65 संस्थानिक क्षेत्र, 'डी' ब्लाक के सामने, जनकपुरी,

नई दिल्ली-110058

फोनः +91-11-28525520 / 28524457, फैक्सः +91-11-28520748

ई–मेल : dg-ccras@nic.in

वेबसाइट : www.ccras.nic.in / www.indianmedicine.nic.in

© सी.सी.आर.ए.एस 2017

यह दस्तावेज केवल प्रचार, प्रसार एवं वितरण हेतु तैयार किया गया है, व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं। इस सामग्री का पुनरूपयोग सी.सी.आर.ए.एस. से अनुमति लेने के बाद ही किया जा सकता है।